PHILOSOPHY

PG, Paper-VIII (UG Paper I & VIII)

अद्वैत वेदान्त में ब्रह्म
Brahmn (ब्रह्म) शंकराचार्य

Dr. S. K. Singh
Mob.-9431449951

→ शंकराचार्य के अद्वैतवाद का प्रतिपाद्य विषय 'ब्रह्म' की एकमात्र सत्ता की स्वीकृति है। ब्रह्म ही एकमात्र सत् है, जगत मिथ्या है और जीव भी परमार्थतः ब्रह्म है, ब्रह्म से भिन्न नहीं है - 'ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या जीवो ब्रह्मैव नापरः'।

→ 'ब्रह्म ही एकमात्र सत् है' में 'सत्' का आशय त्रिकालाबाधित (त्रिकाल+अबाधित) सत् से है, अर्थात् जिसका किसी काल में बाध नहीं हो, वह सत् है। इस अर्थ में ब्रह्म ही एकमात्र सत् है।

→ शंकराचार्य के अनुसार सत् की तीन कोटियाँ हैं—

प्रातिभासिक सत्	व्यावहारिक सत्	पारमार्थिक सत्
यह व्यक्तिगत स्तर का सत् है जो आभासित होता है किन्तु व्यवहारावस्था में इसका बाध हो जाता है। जैसे- भ्रम (रज्जुसर्प) और स्वप्न की अवस्था। इसमें कभी-कभी नियम व सातत्य पाया जाता है।	यह समष्टिगत स्तर का सत् है जिसका बाध पारमार्थिक सत् पर होता है। यही व्यावहारिक सत्ता है जो पारमार्थिक सत्ता का विवर्त है। इसमें अनिवार्यतः नियम व सातत्य पाया जाता है।	अद्वैत सत्ता, जिसे 'ब्रह्म' या 'आत्मा' कहा जाता है, जिसका त्रिकाल में बाध नहीं हो सकता। 'त्रिकालाबाधित सत्'।

→ इस प्रकार शंकराचार्य का ब्रह्म एकमात्र पारमार्थिक सत् व अन्तिम सत्ता है।

→ शंकराचार्य ने ब्रह्म के दो लक्षणों को स्वीकारा है - तटस्थ लक्षण और स्वरूपलक्षण।

→ तटस्थ लक्षण → ब्रह्म के आगन्तुक या परिणाम लक्षण को ब्रह्म का तटस्थ लक्षण कहते हैं। किसी वस्तु का आन्तरिक स्वरूप न होते हुये भी अन्य वस्तुओं से उसका भेद करनेवाला लक्षण तटस्थ लक्षण कहलाता है। ब्रह्मसूत्र का द्वितीय सूत्र 'जन्माद्यस्य यतः' इस लक्षण को दर्शाता है। इस सूत्र का आशय है कि ब्रह्म जन्म देनेवाला, पालन करनेवाला, विनाश करनेवाला होता है।

→ स्वरूप लक्षण:- स्वरूप लक्षण ब्रह्म के वास्तविक-आन्तरिक-पारमार्थिक-तात्विक स्वरूप को इंगित करता है। किसी वस्तु का आन्तरिक स्वरूप, जो उसे अन्य वस्तुओं से पृथक करता है, स्वरूपलक्षण कहलाता है। अपने स्वरूप लक्षण में ब्रह्म सच्चिदानन्द स्वरूप है - ब्रह्म सत् है अर्थात् त्रिकालाबाधित सत्, चित् है अर्थात् विशुद्ध चैतन्यस्वरूप (ज्ञानस्वरूप), आनन्द है अर्थात् अखंडानन्द स्वरूप। उल्लेखनीय है कि ब्रह्म का सत्, चित् और आनन्द से विशेषण-विशेष्य संबंध नहीं है, अपितु यह ब्रह्म का स्वरूप है - 'सत्यंज्ञानमनन्तं ब्रह्म' (तैत्तरीय उपनिषद्)।

→ ब्रह्म अपनी मौलिकता में अवर्णनीय है। इसका भावात्मक रूप से वर्णन नहीं किया जा सकता। शंकर इस संदर्भ में 'नेति-नेति' की बात करता है, पाश्चात्य बुद्धिवादी स्पिनोजा भी ईश्वर के संबंध में अवर्णनीयता को स्वीकार करता है। इसके अनुसार भी ईश्वर पर गुणों का आरोपण करने पर वह सीमित व अपूर्ण हो जायेगा। 'नेति-नेति' ब्रह्म का निषेध नहीं है बल्कि उसकी निर्वचनीयता का निषेध है।

Scanned with CamScanner

→ ब्रह्म के दो रूप हैं - निर्गुण और सगुण। उपनिषदों में जिसे ~~परब्रह्म~~ 'पराब्रह्म' कहा गया है, उसे ही यहाँ 'निर्गुण ब्रह्म' की संज्ञा दी गई है। यहाँ 'निर्गुण' का आशय गुण-रहित न होकर ~~से~~ गुणातीत सत्ता से है। ब्रह्म अपनी मौलिकता में निर्गुण, निराकार एवं निर्विशेष है। उसी ~~प्र~~ प्रकार उपनिषदों में जिसे 'अपरब्रह्म' कहा गया है, उसे ही यहाँ 'सगुण ब्रह्म' की संज्ञा दी गई है। जब ब्रह्म माया की उपाधि से युक्त होता है तो वह 'ईश्वर' होता है - मायोपाधित ब्रह्म ही ईश्वर है।

ब्रह्म

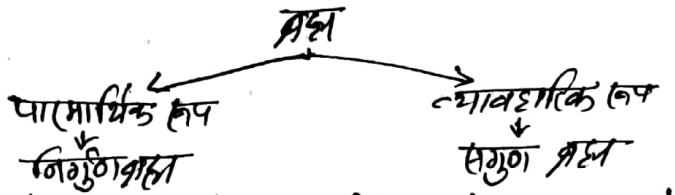

पारमार्थिक रूप → निर्गुण ब्रह्म

व्यावहारिक रूप → सगुण ब्रह्म

→ शंकराचार्य के अनुसार ब्रह्म में किसी प्रकार का भेद नहीं है — न सजातीय, न विजातीय और न स्वगत भेद। ब्रह्म में कोई सजातीय भेद नहीं क्योंकि ब्रह्म के समरूप कोई अन्य तत्त्व नहीं, ~~विजातीय भेद~~ ब्रह्म में विजातीय भेद नहीं क्योंकि ब्रह्म से भिन्न विपरीत तत्त्व वाला भी कोई दूसरा तत्त्व नहीं और ~~उसमें~~ ब्रह्म में स्वगत भेद भी नहीं क्योंकि ब्रह्म तो निराकार है और निराकार के अवयव नहीं हो सकते। ब्रह्म ~~अद्वैत सत्ता है,~~ अद्वैत तत्त्व है।

→ शंकराचार्य के अनुसार ब्रह्म का किसी भी प्रकार से विरोध भी संभव नहीं है। विरोध दो प्रकार का होता है - प्रत्यक्ष विरोध और संभावित विरोध। इन्द्रियों के आधार पर किया गया विरोध प्रत्यक्ष विरोध है, चूँकि ब्रह्म इन्द्रियानुभव का विषय नहीं है, इस कारण ब्रह्म का प्रत्यक्ष विरोध नहीं हो सकता। युक्तियों के आधार पर किया गया विरोध संभावित विरोध है, चूँकि ब्रह्म ~~इन्द्रियातीत~~ अनिर्वचनीय है, इस कारण ब्रह्म का संभावित विरोध भी नहीं किया जा सकता।

→ शंकराचार्य के अनुसार ब्रह्म प्रमाणों द्वारा भी ज्ञात नहीं हो सकता क्योंकि रूप आदि के अभाव के कारण ब्रह्म प्रत्यक्ष का विषय भी नहीं है। ~~लिंग,~~ लिंग (हेतु) आदि के अभाव के कारण ब्रह्म ~~प्रत्यक्ष~~ अनुमान का विषय भी नहीं है।

→ ब्रह्म निर्विकल्प है। वस्तुतः ब्रह्म को किसी प्रमाण के द्वारा नहीं जाना जा सकता क्योंकि प्रमाणों से ज्ञान की स्थिति द्वैत ~~के स्तर पर~~ (ज्ञाता-ज्ञेय) के स्तर पर उभरकर सामने आती है जबकि ब्रह्म शुद्ध अद्वैतस्वरूप है।

→ ब्रह्म वस्तुतः निर्गुण और निर्विशेष है, अतः अपरिभाष्य है। इन्द्रिय, बुद्धि विकल्प, और वाणी द्वारा ग्राह्य नहीं होने से इसे अगोचर (अतीन्द्रिय), निर्विकल्प और अनिर्वचनीय कहा जाता है। वह शुद्ध चैतन्यस्वरूप है और समस्त ज्ञान एवं अनुभव का अधिष्ठान है; वह स्वतःसिद्ध तथा स्वप्रकाश है। उसका निराकरण असम्भव है क्योंकि जो निराकर्ता है, वही उसका स्वरूप है।

→ अपरोक्षानुभूति ही ब्रह्मसाक्षात्कार (आत्मसाक्षात्कार) है, अपरोक्षानुभूति के अतिरिक्त जो प्रमाण हैं, उनका कार्य ब्रह्मसाक्षात्कार कराना नहीं है।

—Dr. S. K. Singh
Dept. of Philosophy
Mob.- 9431449951.

Scanned with CamScanner